928 P
804
H

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI.

Call No. ____________

Accession No. ________

GIPNLK—7/DAND—5-9-60—15,000

1207
10/21

Prw
20-1

891.431
Sw11

स्वराज्य आल्हा

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
30 MAR. 1931

संग्रहकर्त्ता व
* प्रकाशक *
लाला भगवानदास
मु० पो० अहेरीपुर
जिला इटावा ।

हिन्दूप्रेस इटावा में छपा ।

प्रथम बार १००० } संवत् १९८७ { मूल्य दो आना

5/30

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 804
Date 21.12.71
GOVT. OF INDIA

वन्देमातरम्

स्वराज्य आल्हा

संग्रहकर्त्ता व

* प्रकाशक *

लाला भगवानदास

मु० पो० अहेरीपुर

जिला इटावा।

हिन्दूप्रेस इटावा में छपा।

पहली बार २०००	मूल्य -)॥

॥ श्री वन्देमातरम् ॥

स्वराज्य आल्हा

वन्दना

मुकुट हिमालय शिरपर सोहत, केशर काशमीर की भाल।
"भारतमाता" तुमको सुमिरौं, बल बुधि हमें देउ ततकाल॥
तिलक गोखले विपिन बनर्जी, अइयर-गांधी राखौ लाज।
नौरोजी, बेसेन्ट, मालवी, पूरन कीजो आल्हा स्वराज॥
चिन्तामणि, गोकर्ण, घोषबसु, इमाम, जिन्ना, सप्रू, लाल।
दास, नेहरू, अरण्डेल सब, मेटौ दास्यभाव जंजाल॥
हार्नीमैन, वाडिया पोलक, एन्ड्रूज परांजपे टागोर।
राजा, सिनहा, खापर्डे भी, कीजे दया हमारी ओर॥
मदन, माधव, पूर्ण मैथली, श्रीधर कंठ विराजो आय।
त्यौं चक्रधर त्रिशूल, भार्गव, कन्हु सनेही सकल सहाय॥
ऐसा आवेश भरौ कि जिसमें, होवे होम रक्त की धून।
मुरदों में भी जोश मारने, लगै स्वदेश भक्ति का खून॥
बिना देश उद्धार किये नहिं, लेवें पल भर भी विश्राम।
समझें अधिक जान से प्यारा, अपनी मातृभूमि का काम॥

विघ्नों को वह कभी न देखें, दुख सहने को रहैं तयार।
ईश्वर पर विश्वास रोपके, दिलसे भयको देंय निकार॥

भारत की दुर्दशा।

आज समैया है भारत पै, नइया कौन लगावै पार।
बड़े बड़े आंसुन मैया रोवै, हाय दइया गति लखीनजाय॥
गद गद स्वर सों छैयो कहके, लैके बलैया करत पुकार।
तुम्हें छमासी नींद लगी है, देखत नाहीं पलक उघार॥
हीन दीन हुयगये सकलविधि, निपट भये हैं दुखी महान।
रोटिन तक के अब लाले हैं, कपड़न को का करैं बखान॥
अनपढ़ भये सकल नर नारी, जिनके रहो न अपनो ज्ञान।
कोठी कोठी सबकी रहिगई, अब दिखलउआ शेखी शान॥
अपने अपने मनमें झींकत, कापै कहैं हिये की खोल।
ऊपर के हैं छैल चिकनियां; भीतर भये ढोलके पोल॥
तरह तरह के टैक्स लगते हैं, आमदनी का है यह हाल।
घरमें दस हैं दसौ कमत हैं, तौभी परत न पूरो साल॥
घी और दूध दिखोन न आंखिन, सपने कैसी हो गई बात।
आय जात द्वारे जब कोऊ, तब सांची कैफ़ियत दिखात॥
इसी ग़रीबी के कारण ही, हम सब भये बहुत हैरान।
पेड़न पै भर देत गवाही, बेंचत बीच हाट ईमान॥
कोऊ चोर न कोऊ डांकू, और न कोऊ बेईमान।
पापी पेट कराता सब कुछ, चेतो भारत की संतान॥

देख लेउ अपनी आंखन से, तब के बूढ़े अबके ज्वान
दिन २ होत जात हैं निर्बल, कैसे कहो होय कल्याण ॥

कलियुग को व्यर्थ दोष ।

लाल बुझक्कड़ तब उठ बोले, है सब कलियुग का परताप।
अनपढ़ भइया कहन लगे बस, बाबा ठीक कहत हैं आप ॥
लेकिन कारण यह नाहीं है, भइया सुनलो कान लगाय।
क्या कलियुग है इसी देश में, वहतो रहा दुनी में छाय ॥
और देश क्यों मालदार हैं, अमरीका, इटली, जापान।
भरे खचाखच रुपये बैठे, फ्रांस, जर्मनी इंगलिस्तान ॥
क्या कलिजुग हम पै गुस्सा है, दुख भोगत जो हिन्दुस्तान।
असली कारण है जो कुछभी, सो हम तुमसे करत बयान ॥

पराधीनता ।

पराधीन सपनेहु सुख नाहीं, रामायण में लिक्खा तात।
जब तक हम "परतंत्र" रहेंगे, तब तक यही रहेगी बात ॥
ऊपर जो जो मुल्क गिनाये, वह सब हैं स्वतंत्र स्वाधीन।
इसी वजह से वहां बजत है, आठों पहर चैन की बीन ॥
वह अपना प्रबन्ध खुद करते, मनमाने रचते कानून।
शिल्प आदि रुजगार वहां है, दिन २ नफा उठाते दून ॥
है इख्त्यार उन्हें नहिं भेजें, अपना कच्चा माल विदेश।
इसी सबब से पक्का करके, बेंच उठाते नफा विशेष ॥

लाखों वहां कारखाने हैं, तरह तरह के हैं रुजगार ।
फिर वह कहो होंय क्यों निर्धन, रोज कमावें जो कल्दार ॥
वहां की बातें वहीं रहन दो, अब यहां के सुन लेउ हवाल ।
हम तकते हैं मुंह गैरों का, कैसे कहो गले फिर दाल ॥
अपने मनके अपने हित के, हम नहिं रच सकते कानून ।
है रुजगार यहां नहिं तबफिर, कैसे मिले पेट भर चून ॥
एक भरोसा है खेती को, सोऊ महीं लगान हर साल ।
चला जात दूजे मुल्कों में, हाय हमारा कच्चा माल ॥
होंय कारखाने तो उनमें, करें कलों से माल तयार ।
थोड़े दिन में ही फिर देखो, कैसा बढ़ता है रुजगार ॥
सुई बेंचकें दियासलाई, साबुन बटन कलम दावात ।
स्लेट पेंसिल कागज शक्कर, कंघा छाता छड़ी बनात ॥
तेल फुलेल दवाई घड़ियां, सिगरिट कुतुबनुमा औ लैम ।
डिबियां शीशा औरखिलौना, बाजा टोपी मोजा फेन ॥
गुलबन्द फनथाइन स्याही, गेंद और फुटबाल अपार ।
हैट बेग चश्मा औ जूता, साईकिल वा मोटरकार ॥
धोती मलमल चिकन नैनसुख दुपट्टा आड़ा धारा तीन ।
मखमल फुलवरसाटनअतलस त्यों तनजेब डोरिया जीन ॥
कहांतक बरनैं हम सब चीजें आतीं ज्यों विदेश से यार ।
जो हम खुद ही लगें बनाने, बच जांय डेढ़ अरब कल्दार ॥
धरें हाथ पर हाथ अभी जो बैठे हिन्दुस्तानी भाई
खूब कमावें भरज रहाय, रहैं किसी के क्यों मोहताज ।

मिलै पेट भर जब खाने को, तब फिर क्यों न होंय बलवान।
रोग न आवै पास किसीके, खाय अकाल मृत्यु क्यों प्रान ॥
चोरी होंय न डाकू लूटैं, जब भर पेट भवन में खांय।
दोष न देवें फिर कलजुगको अपनी भूल समझ पछतांय ॥
लेकिन यह सब कैसे होवे, जब तक ध्यान न दे सरकार।
इसीलिये अब है स्वराज्यकी, आवश्यकता हिन्द मंझार ॥

स्वराज्य का अर्थ ।

बृटिश छत्र की छाया में हम, करें देश का स्वयम् प्रबन्ध ।
है स्वराज्यका अर्थ यही बस, समझें कुछ न और मतिअन्ध ॥
दिन दिन दशा देश अपनेकी, बिगड़त जात न देते ध्यान ।
हंसत दूसरे देश देखकर, कहत यही है हिन्दुस्तान ॥
काले कुत्ते कुली आदि कह, जब वह करते हैं अपमान।
डूबो मरो चुल्लू भर जल में, तौभी लगती नहीं गलानि ॥
धर्म न जिसमें वृथा तुम्हें आयो, हो केवल पृथ्वी के भार ।
भारत माता जो दुख भोगै, तो जीवे को है धिक्कार ॥
अन्न खाय जल पीकर जाको, इतने भारी भये जवान ।
ताके दुखको तुम्हैं न दुख है, चेतो अब भारत सन्तान ॥
अरे बहादुरो सिंह सपूतो, निजस्वरूप क्या दियाबिसार।
कर स्मरण पूर्वजों के गुण, करो हिन्द का बेड़ा पार ॥
उन्नति करो रहो मत पीछे, दिखलादो यह बीच जहान ।
सम्पतिशाली स्वराज्य भोगी, यह वह ही है हिन्दुस्तान ॥

होवै नाश कलह का जिसने, हिन्द कर दिया तेरह तीन ।
हाय तुम्हें तबहूं नहिं सूझत, क्या आंखिन से भये विहीन ॥
कारीगरी मिटी भारत की, औ ब्योपार गयो परदेश ।
भई गुलामी हार गले की, पास रहे अधिकार न लेश ॥

हथियारों की जरूरत ।

तोप तमंचा औ तरवारें, छीन लिये हथियार विशेष ।
बड़े बड़े क्षत्री कायर होगये, जिनमें है न बीरता शेष ॥
जनखा हिजरा औ डरपोखा, अब हो चली हिन्द सन्तान ।
युद्ध सुने से डर देखे से, जिनके सूख जात हैं प्रान ॥
तेग़ा कुल्हाड़ी छूरी चाकू, तक हम राख सकत नहिं पास ।
दुगा दुगाडल जो कोऊ राखत, महिनन भुगतत कारावास ॥
चाहैं डाकू हमको लूटैं, खेती खावैं सुअर स्यार ।
चीते शेर हमें खाजावें, पर नहिं बांध सकत हथियार ॥
रूमी रूसी और विलायती, चीनी जापानी सब लोग ।
महा जंगली अफरीकन भी, करते शस्त्रों का उपयोग ॥
हाय गज़ब को गोला हम पै, टूटो कछू कहीं ना जाय ।
सभ्य और प्राचीन हिन्द से, लिये गये हथियार छिनाय ॥
यह कानून रद्द होजावै, हम सब बांध सकैं हथियार
युद्ध कला में करें निपुणता, कायरता को देंय निकार ॥
तीस करोड़ भुजा के बल से, हम दुश्मन को देंय पछार ।
दे करके सोने सिंहासन, मांगें राज बृटिश सरकार ॥

जैसे भेड़हा भेड़न पैठे, जैसे गिरै लवा पै बाज ।
तैसे झपटें हम दुश्मन पै, औ सुन लेव लाट महराज ॥
जैसे घन में बिजली चमकै, तैसे दमके यह तलवार ।
उड़ उड़ क्षत्री करें लड़ाई, मारा मार पुकार पुकार ॥
इन्हीं कारणों से तो हमने, ठान लिया है मन में आज ।
बृटिश छत्र की छाया नीचे, अवश करेंगे प्राप्त स्वराज्य ॥

व्यापार ।

राह छूट गई हथियारन की, अब व्योपार के सुनौं हवाल ।
हाय गरीबी हम पै छाई, परदेशी भये माला माल ॥
एकदिवस वह था जब हमथे,धनशाली औ सम्पतिवान ।
सोने की चिड़िया भारतको, सुनत सिकन्दर पहुंचा आन ॥
खुद हम अपना माल बनाकर, अपने भर कर विपुल जहाज ।
करते थे व्योपार दूसरे मुल्कों में जाकर महराज ॥
तब न कलें चलतीं थीं ऐसी, सब कुछ करते थे यह हाथ ।
बाजी नहीं मार सकता था, तब कोई भी हमारे साथ ॥
मुंदरी में से कढ़ जाता था, ढांके की मलमल का थान ।
इसी तरह सब और काम थे,जिनका कहां तक करूं बयान ॥
राज कम्पनी अंगरेजन का, जब से आया हिन्द मझार ।
उनकी कूट नीति के कारण, चौपट हुआ सकल रुजगार ॥
उनका सारा यहमतलब था,कृषि प्रधान होजावें देश ।
केवल खेतीके न और कुछ, कर पावें यह कार्य विशेष ॥

कच्चा माल तयार करें यह, जिसे खरीदें हम हर्षाय ।
पक्का माल बनाकर उसका, बेचें हाथ इन्हीं के आय ॥
जैसे कच्चा माल रुई है, पक्का हुआ वस्त्र बन थान ।
यह मंसूबा बांध इन्हों ने, हमें कर दिया निपट किसान ॥
पहले तो यह व्योपारी थे, आये थे करने व्योपार ।
लेकिन अपनी चालाकी से, पीछे बन बैठे सरकार ॥
एक चाल यह चली गई जो, वह भी देता हूं समझाय ।
इस 'स्वतंत्र व्योपार" नीतिको जबरन हम पर दी फैलाय ॥
इसका मतलब यह है मित्रो; आजादी से दूजे देश ।
करें यहाँ व्योपार आयकर, जिनको रोक रही नहिं लेश ॥
हा! इसका यह हुआ नतीजा, आने लगा कलों का माल ।
जिसके सन्मुख इन हाथों की, कैसे गल सकती है दाल ॥
वह रक्षित व्योपार हमारा, हुआ अन्त में मटियो मेट ।
रहे न धन्धे आय घट गई, भर न सके फिर अपना पेट ॥
रहंटा चरखा तक भी निपटे, भई औरतें तक बेकार ।
लगा विदेशी सूत भी आने, बहुतक टूट गये रुजगार ॥
हमें न अब भी गिल्ला होता, जो करती सरकार सहाय ।
शिल्प कला की कलें बनाने, और चलाना देत सिखाय ॥
देती मदद कारखानों के, खुलने में अपना दिल खोल ।
लेते बाजी मार आज हम, भीतर हाट बजाकर ढोल ॥
आज समझया वह आयो है, हमपै कछू कही ना जाय ।
औसत आय हमारी ग्यारह, पाई है प्रति दिन की हाय ॥

मलमल दममे औ गुलछर्रें, जौन उड़ाते थे नित आय।
तिन हिन्दुस्तानिनकी दुर्गति, हम पै यार न बरनी जाय॥
मांगन लगे भीख नर कोटिन, साधू होगये बावन लाख।
हाय पेट पापी के मारे; दिन दिन उठत जात है साख॥
दस करोड़ नर ऐसे होंगे, जो न अन्न पावें भर पेट।
इसी सबब सें नित मरते हैं, होकर रोगों के आखेट॥

रोग और उम्र।

न्यूज़ीलैंड साठ इङ्गलैंड में, औसत उम्र है चालिस साल।
तेइस वर्ष आयु भारत में, अब रहगई खात फिर काल॥
ज्वर मलेरिया और निमोनियां, हैजा प्लेग न छोड़त साथ।
भरी जवानी में जवान, जिंदगानी से धो देता हाथ॥
विधवा बनिता उनकी तड़पैं, लखकर भादों की बरसात।
बिन आगी के जलते रहते, जिनको देख ससुर पितु मात॥
जो व्यापार-नीत भारत की, होती अगर हमारे पास।
तो क्या हाय हमारे धनका, होता ऐसा सत्यानाश॥
तड़प तड़प कर तो भूखों से, मरते नहीं पेट के बांध।
कोई भी न दरिद्री होता, जात न मिर्च मुल्क तज गांव॥
हाय फिजी वाले क्यों करते, कुली समझ करके अपमान।
दक्षिण अफ्रीका में जाती, जेल में क्यों भारत सन्तान॥
आज जर्मनी अमरीका से, हम होजाते भव्य महान।
होते सुखी आज हम ऐसे, जैसे इङ्गलैंड और जापान॥

जब होवेगी हाथ हमारे, भारत की व्यापारिक नीत।
दिन दूनी और रात चौगुनी, उन्नति होगी आशातीत॥
इसी सबब से तो हमने, ढूंढ़ा यह उपाय महराज।
ब्रिटिश छत्र की छाया नीचे, अबकि करेंगे प्राप्त स्वराज्य॥

विद्या।

छियन की बातें छिपई रहगई, अब आगे को सुनों हवाल।
कुपढ़ भये हैं भारतवासी, काला अक्षर भैंस समान॥
जब थे राजा भोज यहां पर, पढ़ी सकल थी प्रजा समाज।
अब अनपढ़ होगये करोड़ों, जिनके पड़ी अक्ल पै गाज॥
अमरीका इङ्गलैंड कनाडा, स्विटज़र आयर्लैन्ड प्रद्वीप।
सत्तरह से इक्कीस फीसदी, पढ़ते इन देशों के बीच॥
लगभग दो फीसदी यहां पर, पढ़ती भारत की सन्तान।
शिक्षा में भी फिर हम कैसे, उन देशों से करैं मिलान॥
पन्द्रह रुपया अमरीका में, स्विटज़र दस अस्ट्रलिया आठ।
प्रति जन पर शिक्षा में होते, खर्च विलायत में भी सात॥
लेकिन हिन्दुस्तान देश में, केवल सूखे पैसे चार।
होते हैं प्रत्येक मनुज पर, कैसे शिक्षा होय प्रचार॥
प्रारम्भिक शिक्षा का होगा, जब जबरन औ मुफ्त प्रचार।
और देश वालों से इसमें, तब हम पाय सकेंगे पार॥
लेकिन राज कर्मचारीगण, देते इस पर ध्यान न लेश।
इसीलिये तो अब स्वराज्यको, चाह रहा है भारत देश।

खेती ।

खेती का भी यही हाल है, दिन २ भारी लगत लगान ।
खाने तक को बचा न सकते, बहुतेरे अति दीन किसान ॥
सूद इकन्नी और सवाई, धरता लै लै साहूकार ।
इनका ही हैं रक्त चूसते, अबतक और न हो रुजगार ॥
नये ढङ्ग से खेती करना, नहीं सिखाती है सरकार ।
आमतौरपर सब किसान जो, रक्खें नये नये औजार ॥
अमरीका तरह यहां भी, कास्त कार हों मालामाल ।
उत्तम खेती ही होती है, इसकी करदे खड़ी मिसाल ॥
सुअर सियार उजारत खेती, ये नहिं राख सकत हथियार ।
इसी वास्ते अब स्वराज्य की, भारत भर में मची पुकार ॥

साहूकार हृदय में झोंकत, टैक्स बोझ निज शीश निहार ।
रुपया फिरत न आसामिनसे, सालचैंट भयो शत्रु हमार ॥
कर्जी जमींदार तक हुइ गये, बेटा बिटियां सकत न ब्याह ।
इस प्रकार से मुल्क हमारा, आज हो गया बहुत तबाह ॥

हिन्दुस्तान की हालत ।

एक दिन भारतवर्ष तुम्हारा, सब मुल्कों का था सिरताज ।
ज्ञानऔर विद्याकलाकाघरथा, बढ़ा हुआ था यहां व्यापार ॥
हैजा प्लेग नहीं होते थे, पड़ते थे यहां नहीं अकाल ।
योधा वीर बहुत होते थे, जिनकी मिलतीनहीं मिसाल ॥

पलटा खाया ऐसा युग ने, भारतका दिया खोज मिटाय।
अन धन पहुंचा पार समुन्दर, पड़ी गुलामी हम पर आय॥
आये विदेशी करने तिजारत, हमने उनको दिया सत्कार
पर वह अपनी चालाकी से, यहां के बन बैठे सरदार॥
खून चूस २ रैयत का, भेजा माल समुन्दर पार।
भूखे मरते भारत वासी, पर अब किससे कहैं पुकार॥
तिलक देवने दिया संदेसा, सुनलो भारत की सन्तान।
मरजाओ मिटजाओ हक पर, पर ना छोड़ो अपनी आन॥
अबतो ठन गई कठिन लड़ाई, जिसको देय शारदा माये।
जुलम सहे बरसों परजा ने, अब वो सहने के हैं नाय॥
बजी लड़ाई थी जरमन से, इन पर वक्त पड़ा था आय।
खून बहाया हिन्दुस्तान ने, अन्न जन धन से करी सहाय॥
छोड़ आसरा जिन्दगानी का, जूझी भारत की संतान।
रांड़ हजारों हुई देश में, हुई अनाथ बहुत संतान॥
चिकनी चुपड़ी बात बनाकर, दाव घात से लेकर काम।
काला मूरख बताया मुझको, अच्छी तरह किया बदनाम॥
इसका बदला दिया रौलेट से, भला किया हमको आज़ाद।
मुसलिम खाये दीन दुनी से, किया खिलाफत को बरबाद॥
हत्याकाण्ड रचा भारत में, दई लहू की नदी बहाय।
बालक बूढ़े मरे बहुत से, गोली बरसी मेघ अघाय॥
बिस्तर धरे सरों पर लड़के; गये चलाये बीसों कोस।
नहीं किसी ने चूं तक भी की, ज्यादा है इसका अफसोस॥

अंश मनुष्यता कानहीं छोड़ा, मार दिये हिरदे के घाव।
पतिवृतन के घूंघट खोले, उनकी इज्जत करी खराब॥
मुंह में थूका कोड़े मारे, सारा गारत किया पञ्जाब।
छोटे बालक औरत मारीं, देखें जलियां वाला बाग़॥
क्याहालत बरनू अमृतसर की, जलियां वाला क्या लाहौर।
पेट रेंगाये तुम्हरे भाई, ज्वानों सुनलो करके गौर॥
बड़े बहादुर डायर साहब हैं, जिनकी जग जाहर तलवार।
छोड़ीं गोलीं थीं निहत्थों पर, बालक बूढ़े डाले मार॥
फिर इन्साफ़ कियो हन्टर ने, जालिम दीन्हें साफ बचाय।
अंग्रेजी जाति ने मिलकर, डायर चन्दा दिया उघाय॥
आसानी वृटिश जाति ये, देगी हमारा नो न्याय चुकाय।
थाती फिरमयाइस आशापर, अब दीखें अपने दिन आय॥
नहीं किसी को कौम दूसरी, दुनियां में करती आज़ाद।
पैरों तले कुचल निर्बल को, खूब करें उसको बरबाद॥
लूट के हमको कोई लेजावे, इनको कौन पड़ी परवाय।
अफरीका में कुली बना कर, दिया गुलामी में बंधवाय॥
कनाडा में घुसने नहीं पावें, फिजी द्वीप में बुरा हवाल।
यहीं गुलामी करना चाहें, हमको दुनियां से पामाल॥
और देश की बात कहें क्या, अपना तो ना है घरबार।
जबांबन्द और कलम बन्द है, और हैं रोने से लाचार॥
अपनी रक्षा तक के काबिल, छोड़ा हमको नहीं जनाब।
अस्त्र छीन के बनाये हिजड़े, ऊपर कर दिया खूब खिजाब॥

राय बहादुर खान बहादुरके, देदिये हमको बड़े खिताब।
दूध दही घी के बदले में, हम पिलाईं खूब शराब॥
जो कोई होवे अहादेश हित, पीछे खुफिया रहे तयार।
नज़र बन्द कर कैद कराकर, जेल में उसको देते डार॥
अरे गुसैयां मेरे परमेश्वर; कर्ता भली बनाई आय।
जीवन होता आजादी का, पराधीन सपने सुख नाय॥
जुलम गुजर गये परले होगई, जग में रहा ठिकाना नाहिं।
पड़े पड़े अब क्या सोचो हो, ऐसे अब बचने की नाहिं॥

वकीलों का शोक।

सोच हो रहा मुख्तारों को, वकला सोच सोच रहिजांय।
बड़े बलिस्टर सारे सोचें, अब क्या जतन बताओ आय॥
अब तक लीडर रहे कौम के, साक सुल्क में थे पुरकार।
पर अब कैसे काम चलेगा, बातों की तो रही ना मार॥
कैसे कालर टाई छोड़ें, कैसे तजें कोट पतलून।
फैशन से बेदार हों कैसे, बड़ा ही टेढ़ा है मज़मून॥
अबतक लोगोंको लड़वा कर, खूब करे थे मौज बहार।
पर अब ज्वाला बढ़ती जावे, साफ कर रही आय हमार॥
यातो खुरपी छोड़ो वकालत, झंडे नीचे आओ आय।
होवे तुम्हारी इज्जत दूनी, कौमके जाओ नायकक्हाय॥
नहीं एक दिन वह आवेगा, फिर नहिं पूछे कोई बात।
भिखमगादरके माफिक बनकर, डकरैं दूँगे रहे दिन रात॥

गान्धी ने गुजरात दबाया, पच्छिम खिस्त दबाई जाय
बङ्गाले में बढ़े दास जी, उलटी बम सीधी हो जाय ॥
दक्खिन में बढ़ गये मोहम्मद, उत्तर बढ़े लाजपति राय
सभी देश में होला मच गया, यू० पी० देख देख रहि जाय ॥
यहां औतार लिया पण्डा ने, लिया जन्म श्रीकृष्ण मुरार।
फन्द छुड़ाये हैं भक्तों के, दुष्टों के कर के संहार ॥
जोतकाखखागड़गयानेहरूका, वो द्रोणचार्य का औतार।
बेटा घूमे अश्वत्थामा का, यज्ञि बाणों की देमार ॥
मोती जवाहर दोनो बेटा, अब यह चमके थे दो लाल।
यही पत रक्खेंगे सूबे की, जिनकी आन दहाड़े काल ॥
बढ़ जाओ काशी वालों, क्यों पद खोओ अपने हाथ।
हिन्द मातकी लाज डुबो कर, क्या कर रहे हो भारी पाप ॥
इकले काशी के जगने से, सारा सूबा उठे जाग।
लहर फैल जायगी सारे में, क्यामेरठ क्या प्रयाग ॥
नहीं मालवो जा हट सकते, देख रहे हैं तुम्हरी बाट।
जबतुम डटो आन पर आकर, जब देखो योद्धाओं केहाथ ॥
सुललोऊधानोंकान लागा कर, भारत माता रही पुकार।
पूर सर करलो इस देवी को, मिले अन्त में सुख अपार ॥

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता—

लाला भगवानदास वैश्य

बुकसेलर अहेरीपुर जिला इटावा।

सूचीपत्र ।

भजनसांगीत महाभारत दोआना
〃 〃 चक्रव्यूह दो आना
〃 〃 〃 दूसरा भाग दो आना
〃 〃 नल चरित्र दो आना
〃 〃 प्रह्लाद चरित्र दोआना
〃 〃 ऊषा स्वप्न दो आना
〃 〃 〃 दूसरा भाग दोआना
〃 〃 कृष्ण बिलास दो आना
〃 〃 रामायण बालकाण्ड
राम जन्म दो आना
〃 〃 सुन्दर काण्ड दो आना
〃 〃 लङ्का काण्ड दो आना
〃 〃 हरिश्चन्द्र दो आना
〃 〃 परीक्षित पहिला दोआना
〃 〃 〃 दूसरा भाग दोआना
〃 〃 रामायणधनुषयज्ञ दोआना
〃 〃 परसराम सम्वाद दोआना

भजन सांगीत रुकमिणी दोआना
〃 अहिल्यातारन दो आना
〃 पारबती बिलास दो आना
〃 बलधार कुंवर दो आना
〃 राजा जालन्धर दो आना
〃 गोपीचन्द्र दो आना
〃 भरथरी दो आना
〃 परीक्षित पाण्डवों का
हिवारो सीजना दो आना
〃 जरासंध पहिला दो आना
दूसरा भाग दो आना
〃 नरसीजी का भात दो आना
〃 राजा बलि के दो आना
〃 सत्राजीत मणिचोरी दोआना
〃 जानकी जन्म अनकपचीसी
एक आना
〃 जानकी विजय दो आना

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता—

लाला भगवानदास बुकसेलर

अहेरीपुर जिला इटावा—